THE BOOK WAS DRENCHED

अमेरिका की लोककथाएँ

Post Graduate Library
College of Arts & Commerce, O. U.

शर्मा वर्मा

H398·21
V31A

UNIVERSAL LIBRARY
OU_186204
UNIVERSAL LIBRARY

.....का लोककथाएं

शुभा वर्मा

प्रकाशक

हिन्दी भवन

इलाहाबाद • जालंधर

१९५९] [मूल्य १·५०

प्रकाशक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
हिन्दी-भवन
३७० रानी मंडी
इलाहाबाद ३

क्रम

१. शीरे का आदमी	१
२. गाने वाली हड्डियाँ	११
३. बातूनी अंडे	१४
४. जैक और उसकी लोमड़ी	१९
५. कटी दुम	२३
६. टेढ़े मुँह का परिवार	२७
७. साझे की खेती	३०
८. जैक और यमदूत	३६
९. शैतान की शादी	४१

मुद्रक—
इन्द्रचन्द्र नारंग
कमल मुद्रणालय
३७० रानी मंडी
इलाहाबाद ३

शीरे का आदमी

एक बार की बात है कि देश भर में सूखा पड़ गया। नदियाँ और नाले, तालाब और पोखरे, कुएँ और खाइयाँ सब सूख गये। चाहे जिधर दृष्टि डालो कहीं पानी नहीं। एक बूँद पानी नहीं। शहरों और गाँवों में रहने वाले आदमी प्यास से तड़पने लगे। जंगलों में रहने वाले पशु-पक्षी पपीहे की तरह आसमान की ओर निहारने लगे। लेकिन पानी को न बरसना था, न बरसा। आखिरकार बहुत पीड़ित हो कर जंगल के सभी जानवर एक जगह इकट्ठे हुए, यह सोचने के लिए कि अब उन्हें क्या करना चाहिए। शेर, भालू, भेड़िया, लोमड़ी, जिराफ, बन्दर, हाथी—यहाँ तक कि खरगोश भी—सभी उस सभा में मौजूद थे। सब मिल कर सोचने लगे कि पानी किस तरह पाया जाय जिससे उनकी प्यास बुझे।

आखिरकार उन्होंने तय किया कि वे एक कुआँ खोदें। हर एक जानवर ने वायदा किया कि वह कुआँ खोदने में मदद देगा। लेकिन खरगोश ने हमेशा की तरह आलस से जम्हाई लेते हुए कहा : "ना बाबा, मुझसे खुदाई-उदाई नहीं हो सकती।"

सारे जानवरों ने उससे कहा : "ठीक है खरगोश साहब, खुदाई आपसे नहीं हो सकती तो मत कीजिए, लेकिन याद रखिए कि एक बूँद पानी आपको पीने के लिए नहीं मिलेगा।"

इस पर खरगोश हँसा और बोला : "बड़ी अच्छी बात है दोस्तो! लेकिन तुम कुआँ तो खोदो। फिर देखना कि मैं किस तरह पानी पी लेता हूँ।"

सारे जानवरों ने मिल कर कुआँ खोदना शुरू किया और बहुत कड़ी मेहनत के बाद आखिर में उसे इतना गहरा खोद ही डाला कि पानी निकल आया। फिर क्या था। सब ने छक कर पानी पिया। कई दिनों की प्यास बुझी। आराम की साँस लेते हुए वे अपने अपने घर चले गये। लेकिन सवेरे कुएँ के पास आने पर क्या देखते हैं—खरगोश के पैरों के निशान, जो कीचड़ में कुएँ के मुँह तक चले गये

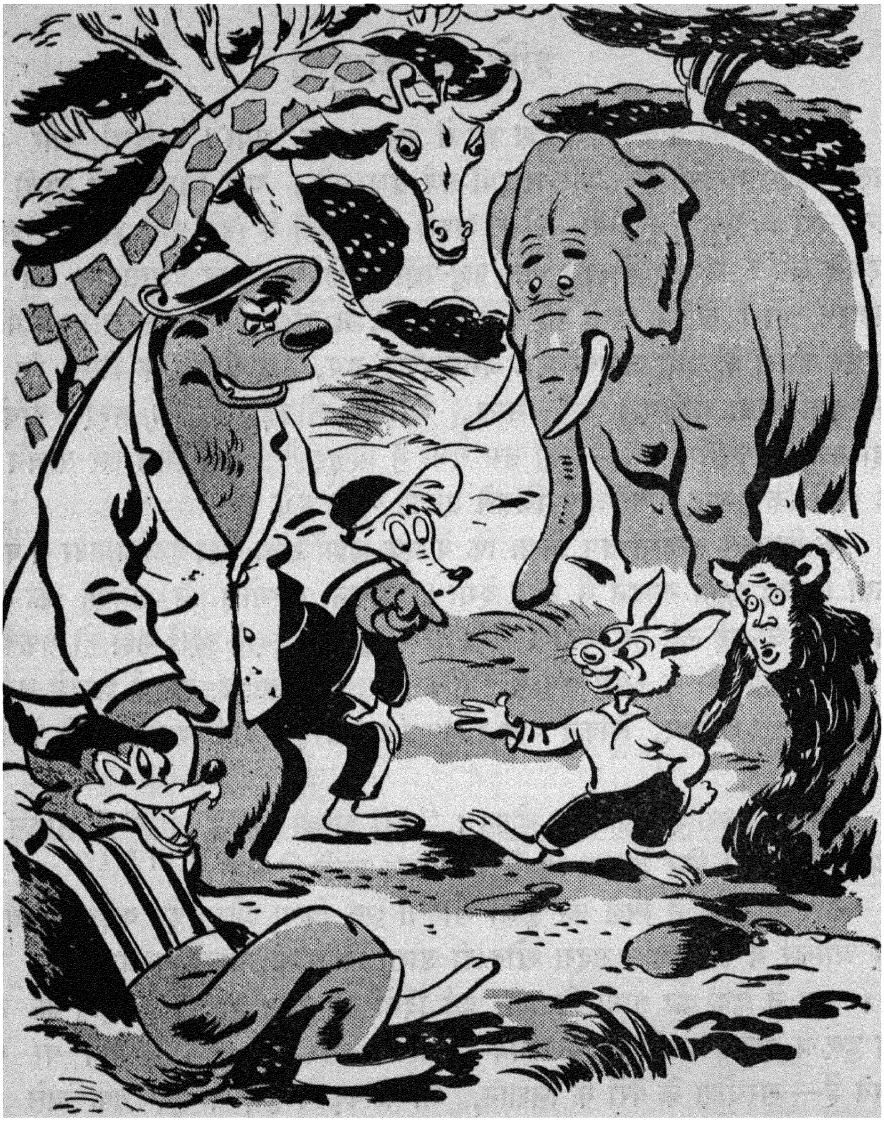

थे। किसी को बताने की जरूरत न थी, सब समझ गये कि खरगोश रात में आया था और पानी को चोरी कर ले गया था।

अब ? यह तो एक नया सवाल उठ खड़ा हुआ ! और वहीं पर फिर जानवरों की सभा होने लगी। वे सोचने लगे कि किस तरह खरगोश को पानी चुराने से रोका जाय। घंटों बहस करते रहने के बाद आखिर यह तय हुआ कि रात में कोई जानवर कुएँ पर पहरा दे। लेकिन कौन पहरा दे ? कोई तैयार ही न हो रहा था। अन्त में भालू ने स्वीकृति देते हुए कहा : "आज मैं कुएँ पर पहरा दे लूँगा। आप लोग जाइए और आराम से सोइए। आप देखेंगे कि आज रात खरगोश महाशय एक बूँद पानी नहीं पा सकते।"

सारे जानवर अपने अपने घर चले गये और भालू वहीं बैठ कर कुएँ को ताकने लगा।

जब रात हुई तो खरगोश घनी झाड़ियों के बीच बनी अपनी माँद से निकल कर बाहर आया। कुएँ के पास पहुँचा तो क्या देखता है कि भालू बैठा पहरा दे रहा है। पहले तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि अब वह क्या करे। कुछ देर वह सोच विचार में डूबा रहा। फिर मुसकराया जैसे कि उसने कुछ तय कर लिया हो। तब वह गाने लगा :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।
नाचोगे क्या मेरे साथ ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

यह गाना सुन कर बूढ़े भालू ने अपना सिर ऊपर उठाया और चारों तरफ देखा। बोला : "अहा हा, यह गाने की मधुर आवाज कहाँ से आ रही है ?"

खरगोश गाये जा रहा था :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।

नाचोगे क्या मेरे साथ ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

अबकी बार भालू अपने पिछले दोनों पैरों के बल खड़ा हो गया।

चालाक खरगोश गाता गया :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।
नाचोगे क्या मेरे साथ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

और अब भालू नाचने लगा और नाचते नाचते कुएँ से इतनी दूर चला गया कि खरगोश को उसका तनिक भी डर न रह गया। बड़ी शान से कुएँ पर जा कर उसने पानी पिया और भाग कर अपने बिल में जा छिपा।

दूसरे दिन सुबह जब सारे जानवर कुएँ पर आये तो उन्हें कीचड़ में फिर खरगोश के पैरों के निशान दिखाई पड़े। और सबके सब मिल कर बूढ़े भालू का मज़ाक उड़ाने लगे! कहने लगे: "वाह भालू दादा वाह, खूब आपने कुएँ की रखवाली की? ज़रा से खरगोश ने बेवकूफ बना दिया।"

भालू ने कहा: "खरगोश मुझे बेवकूफ नहीं बना सकता था। न ही वह बना पाया। मैं यहीं कुएँ की बगल में बैठा पहरा दे रहा था और पूरी तरह जाग रहा था कि यकायक आसमान से बहुत ही मधुर संगीत बरसने लगा। कम से कम मुझे यही मालूम हुआ कि वह संगीत आसमान से बरस रहा है। क्योंकि जब मैं खोजने गया कि वह संगीत कहाँ से आ रहा है तो मुझे कोई नहीं मिला। जब मैं यही खोजने गया होऊँगा तभी खरगोश ने आ कर पानी चुराया होगा।"

इस पर सभी जानवरों ने कहा: "कुछ भी हो, हम आप पर भरोसा नहीं कर सकते।" और उन्होंने बन्दर से कहा: "बन्दर महाशय, आज आप कुएँ पर पहरा दीजिए, लेकिन याद रखिए आपको बड़ी सावधानी से रहना होगा नहीं तो वह खरगोश आपको भी बुद्धू बना देगा।"

बन्दर ने शेखी बघारी: "ज़रा मैं भी तो देखूँ कि वह कैसे मुझे बुद्धू बनाता है!"

और वह उस रात कुएँ पर पहरा देने के लिए रुक गया।

अँधेरा पाख था इसलिए आसमान में चन्द्रमा न था। लेकिन तारे अनगिनत

इधर उधर छितराये हुए थे ! तभी खरगोश घनी झाड़ियों के भीतर से निकला और कुएँ की दिशा में देखने लगा तो पाया कि कुएँ पर बन्दर बैठा है। वह पिछली रात की तरह फिर गाने लगा :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।
नाचोगे क्या मेरे साथ ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

यह मधुर गीत बन्दर के कानों में पड़ा तो वह कुएँ में झाँकने लगा। फिर अपने से बोला : "नहीं, आवाज कुएँ से नहीं आ रही है।"

खरगोश गाता रहा :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।
नाचोगे क्या मेरे साथ ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

इस बार बन्दर ने आसमान की ओर ताका। बोला : "उँहूँ, सितारे भी नहीं गा रहे हैं।"

और खरगोश गाता रहा।

तब बंदर जंगल की ओर देखने लगा। और बोला : "जरूर ही यह संगीत पत्तियों से पैदा हो रहा है। कुछ भी हो मैं इसे यूँ ही बरबाद नहीं होने दे सकता।" और वह नाचने लगा। नाचते नाचते वह कुएँ से इतनी दूर चला गया कि खरगोश को उसका तनिक भी डर न रह गया। बड़ी शान से कुएँ पर आ कर उसने पानी पिया और भाग कर अपने बिल में जा छिपा।

दूसरे दिन सुबह जब सारे जानवर कुएँ पर आये तो उन्हें कीचड़ में फिर खरगोश के पैरों के निशान दिखाई पड़े। वे सब मिल कर बन्दर का मज़ाक उड़ाने लगे। उन्होंने कहा : "बन्दर महाशय, आप भी भालू दादा से कुछ अच्छे नहीं हैं।

असल में आप दोनों से ही हमारा मतलब हल नहीं हो सकता। आप एक खरगोश तक नहीं पकड़ सके!"

बन्दर ने जवाब दिया : "खरगोश की वजह से मैंने कुआँ नहीं छोड़ा था। खरगोश से भला क्या मतलब? मैं पहरा दे रहा था कि यकायक बहुत ही मीठा संगीत जंगल से आता हुआ सुनाई पड़ा और मैं यह देखने चला गया कि कौन ऐसा गाना गा रहा है।"

लेकिन सभी जानवरों ने मिल कर सिर्फ़ उसका मज़ाक उड़ाया। तब वे आपस में तय करने लगे कि तीसरी रात कुएँ पर पहरा कौन दे। लेकिन कोई राज़ी ही नहीं हो रहा था। इसलिए अब वे इस पर विचार करने लगे कि आगे क्या किया जाय। आखिरकार लोमड़ी बोली : "मैं बताती हूँ कि क्या करना चाहिए। आओ, हम सब लोग मिल कर शीरे का एक आदमी बनाएँ और उसे कुएँ का पहरा देने के लिए तैनात कर दें।"

"खूब, खूब, यह तो बहुत अच्छा सुझाव है। चलो हम लोग फौरन एक आदमी बना डालें।" सारे जानवरों ने एक साथ कहा।

सारा दिन मेहनत करके उन्होंने शीरे का एक आदमी बनाया और उसे रात में कुएँ पर पहरा देने के लिए खड़ा कर दिया।

रोज़ की तरह अपने समय से खरगोश माँद से बाहर आया तो उसने शीरे के आदमी को खड़ा देखा। रोज़ की तरह ही वह पहाड़ी की घाटी में बैठ कर गाने लगा :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।
नाचोगे क्या मेरे साथ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

लेकिन शीरे का आदमी भला क्या सुन सकता था! उधर खरगोश गाता रहा :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।

नाचोगे क्या मेरे साथ ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

शीरे के आदमी ने तब भी नहीं सुना। इस बार खरगोश और नज़दीक आ कर गाने लगा :

"मीठे मीठे गीत सुनाता
मैं खुश हो हो कर के गाता।
नाचोगे क्या मेरे साथ ?
आओ और पकड़ लो हाथ।"

लेकिन शीरे के आदमी ने न तो उसका गीत सुना और न कुछ बोला ही। खरगोश ने तब और नज़दीक आ कर अपना गीत जारी रखा। लेकिन शीरे का आदमी था कि एक शब्द भी उसकी ज़बान से न निकला।

अन्त में खरगोश शीरे के आदमी के पास पहुँच कर बोला : "देखो दोस्त, भला तो यह होगा कि तुम मेरे रास्ते से हट जाओ और मुझे पानी पी लेने दो।"

शीरे का आदमी अपनी जगह से हिला भी नहीं।

खरगोश ने खीझ कर कहा : "मैं फिर कहता हूँ कि मेरे रास्ते से हट जाओ। और ऐसा नहीं करोगे तो मैं घूँसे मार मार कर तुम्हारी नाक तोड़ दूँगा।"

लेकिन शीरे के आदमी ने हटना तो दूर रहा एक उँगली तक न हिलाई।

गुस्से में आ कर खरगोश ने खूब ज़ोर से दायाँ हाथ उठा कर एक घूँसा उसे मारा। लेकिन वह तो शीरे का आदमी था—खरगोश का हाथ ही उसमें चिपक कर रह गया!

"छोड़ो मेरा हाथ नहीं तो मैं दूसरे हाथ से घूँसा मारूँगा।" खरगोश ने झल्ला कर कहा।

शीरे का आदमी हिला तक नहीं। इस पर खरगोश ने बायाँ हाथ उठा कर घूँसा मारा और वह भी चिपक गया।

"अच्छा, तुमने दोनों हाथ पकड़ लिये मेरे! मैं कहता हूँ छोड़ो, नहीं तो मेरे

पैर की एक ठोकर से ही तुम्हारा दिमाग़ ठीक हो जायेगा।" खरगोश ने कहा।

शीरे का आदमी उसी तरह चुपचाप खड़ा रहा।

तब खरगोश ने अपने दाहिने पैर से उसे मारा और वह पैर भी चिपक गया।

"छोड़ो मेरा पैर, नहीं तो मैं बायें पैर से तुम्हें मारूँगा।" खरगोश ने कहा।

शीरे का आदमी चुपचाप खड़ा रहा।

बहुत गुस्से में आ कर खरगोश ने बायें पैर से उसे ठोकर मारी तो वह भी चिपक गया।

"अच्छा, तो तुमने मेरे हाथ पैर दोनों पकड़ लिये। मैं कहता हूँ छोड़ दो नहीं तो मैं अपने सिर से तुम्हें मारूँगा।" खरगोश ने चिल्ला कर कहा।

और शीरे के आदमी का कोई जवाब न पाने पर उसने अपने सिर की ठोकर उसे मारी और उसका सिर भी चिपक कर रह गया।

दूसरे दिन सुबह सारे जानवर जब कुएँ पर आये तो खरगोश की हालत देख कर हँसते हँसते लोट पोट हो गये। खरगोश का मज़ाक बनाते हुए बोले : "ओह, कहिये जनाब क्या हाल हैं? खूब पानी चुराया आपने। लेकिन अब एक बूँद भी चुराने नहीं पाइएगा। जानते हैं क्यों? लकड़ी के कुंदे पर आपको लिटा कर हम आपका सिर काट डालेंगे।"

यह सुन कर खरगोश ने हँस कर कहा : "सिर काटोगे? शौक से काट डालो। असल में मेरी हमेशा यही इच्छा रही है कि कोई मेरा सिर काट डाले। किसी और तरह मरने से इस तरह मरना कहीं ज्यादा अच्छा है। कब काटोगे? अभी?"

खरगोश का यह जवाब सुन कर दूसरे जानवरों ने कहा : "तुम चाहते हो कि तुम्हारा सिर काट डाला जाय? तब हम नहीं काटेंगे। जिस तरह तुम चाहते हो उस तरह हम तुम्हें नहीं मारेंगे। हम तुम्हें गोली से उड़ा देंगे।"

"यह तो और भी अच्छा है।" खरगोश ने कहा : "अगर तुम लोगों ने मुझे सोचने का मौका दिया होता तो मैं सबसे पहले यही कहता। जल्दी गोली मार दो मुझे।"

"नहीं, अब हम तुम्हें गोली भी नहीं मारेंगे," जानवरों ने कहा। और तब वे ी देर तक आपस में बहस करते रहे कि किस तरह खरगोश को मारा जाय। न्त में भालू ने कहा : "मैं बताऊँ हम लोग क्या करेंगे ? एक आलमारी में बन्द के तुम्हें खूब खिलायेंगे। इतना खिलायेंगे कि तुम मक्खन की तरह फूल जाओ। ब हम लोग तुम्हें खूब ज़ोर से हवा में उछाल देंगे जिससे कि तुम चट्टान पर गिरते मर जाओ।"

"नहीं, ऐसा मत करो," खरगोश ने बिलख कर कहा : "मैं इस तरह नहीं रना चाहता। कोई और तरीका चाहे अपना लो लेकिन इस तरह मत मारो।"

इस पर सभी जानवरों ने एक स्वर से कहा : "तुम इस तरह नहीं मरना चाहते ? ो ठीक है हम तुम्हें इसी तरह मारेंगे।"

और उन्होंने खरगोश को आलमारी में रख कर खूब खिलाना शुरू किया। बल रोटी, केक, चीनी, मतलब यह कि हर अच्छी चीज़ उसे इतनी खिलाई गई कि ह मक्खन की तरह फूल गया। तब वे उसे पहाड़ी पर ले गये। वहाँ पहुँच कर सका एक पंजा शेर ने पकड़ा, एक लोमड़ी ने, एक भालू ने और एक बन्दर ने। ब उसे आगे पीछे हिलाते हुए, एक, दो, तीन कह कर खूब जोर से हवा में उछाल देया। कुछ क्षण बाद ही वह ज़मीन पर गिरा और गिरते ही उठ खड़ा हुआ और ोला :

"सरपट सरपट दौड़ लगाता, मैं नन्हा खरगोश
आओ पकड़ सको यदि मुझको, और सम्हालो होश।"

और तेज़ी से दौड़ कर अपनी माँद में घुस गया। सारे जानवर एक दूसरे का मुँह ताकते रह गये।

गाने वाली हड्डियाँ

एक समय की बात है, एक बूढ़ा और बुढ़िया रहते थे। उनके पचीस बच्चे थे और वे बहुत गरीब थे। बूढ़े का स्वभाव जितना अच्छा था, बुढ़िया का स्वभाव उतना ही बल्कि उससे कहीं ज्यादा बुरा। उसके इस बुरे स्वभाव का शिकार बूढ़े को रोज़ ही होना पड़ता था।

हर रोज़ जब वह शाम को अपने काम से लौट कर आता तो बुढ़िया उसका खाना परोसती। लेकिन उसके गोश्त में हड्डी एक भी न होती।

बूढ़ा कहता : "आखिर बात क्या है कि इस गोश्त में हड्डियाँ ही नहीं हैं?"

बुढ़िया जवाब देती : "असल में मैं ही ऐसा गोश्त लेती हूँ जिसमें हड्डियाँ न

हों। हड्डियाँ बहुत भारी होती हैं। इसलिए उन्हें न लेने पर उतने ही पैसों में ज्यादा गोश्त मिल जाता है।"

बेचारा बूढ़ा इसका क्या जवाब देता! चुपचाप खा लेता।

कभी-कभी वह बुढ़िया से पूछता : "तुम क्यों नहीं गोश्त खाया करतीं?"

बुढ़िया जवाब देती : "तुम यह क्यों भूल जाते हो कि मेरे मुँह में दाँत नहीं हैं? बिना दाँतों के मैं गोश्त कैसे खा सकती हूँ?"

"सच तो है," बूढ़ा कहता। और इससे आगे वह एक भी शब्द ज़बान पर न लाता। क्योंकि वह अपनी पत्नी को दुख नहीं पहुँचाना चाहता था। वह उससे थोड़ा डरता भी था, क्योंकि वह जितनी बदसूरत थी उतनी ही दुष्ट भी।

जिस आदमी के पचीस बच्चे हों वह हमेशा उनकी फिकर नहीं रख सकता। और अगर एक दो कम हो जायँ तो यकायक जान भी नहीं सकता। एक दिन खाना खाने के बाद बूढ़े ने अपनी पत्नी से कहा कि सब बच्चों को बुलाओ।

थोड़ी देर बाद बच्चे आ कर उसके पास इकट्ठे हुए तो उसने गिन कर देखा कि वे सिर्फ पन्द्रह ही थे। इस पर बूढ़े ने बुढ़िया से पूछा : "बाकी दस बच्चे कहाँ हैं?"

बुढ़िया ने जवाब दिया : "वे सब हवा बदलने के लिए अपनी नानी के यहाँ गये हुए हैं।"

इसके बाद बूढ़े ने रोज़ बच्चों को देखना और गिनना शुरू कर दिया, लेकिन हर रोज़ उसे एक बच्चा कम नज़र आने लगा। बुढ़िया से पूछने पर वह कह देती कि हर रोज़ एक बच्चा अपनी नानी के यहाँ चला जाता है। बूढ़ा सिर हिला कर रह जाता।

एक दिन हमेशा की तरह जब वह लौटा तो फाटक के पास एक बड़े पत्थर को देख कर रुक गया। वह अपने बच्चों के बारे में सोच रहा था कि उनकी नानी के यहाँ जा कर अब उन्हें घर ले आना चाहिए। उसी समय उसे एक गाना सुनाई पड़ा :

"माता ने हम सब को मारा, और पिता ने खाया।
हम हैं वही अभागे बच्चे, जिनको यहाँ दबाया।"

पहले तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि यह क्या है और यह गाने की

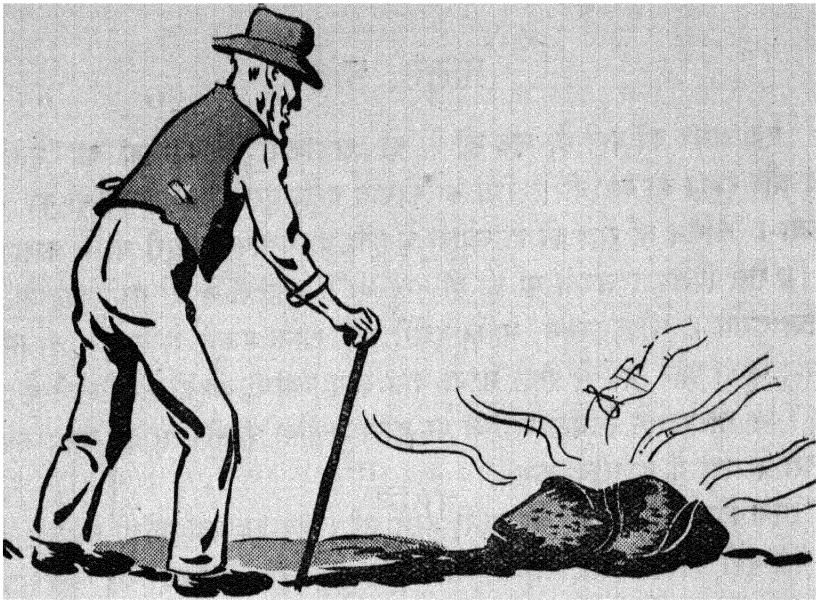

आवाज़ कहाँ से आ रही है। तब उसे लगा कि यह आवाज़ इस बड़े पत्थर के नीचे से ही आ रही है। आगे बढ़ कर उसने पत्थर खिसकाया तो उसके नीचे तमाम हड्डियाँ दिखलाई पड़ीं। उसके पत्थर उठाते ही हड्डियों में से फिर गाने की आवाज़ आई :

"माता ने हम सब को मारा, और पिता ने खाया।
हम हैं वही अभागे बच्चे, जिनको यहाँ दबाया।"

और अब उसकी समझ में साफ-साफ आ गया कि उसकी पत्नी ने बच्चों को ही मार कर पकाया था और उसने खुद उन्हें खाया था। उसका शरीर गुस्से से जल उठा और उसने अपनी पत्नी को मार डाला। दूसरे दिन बच्चों की हड्डियों को उसने कब्रगाह में दफना दिया। उसके बाद जब तक जिन्दा रहा अकेला रहा और उसने कभी भी गोश्त नहीं खाया; क्योंकि उसका विचार बन गया था कि जो गोश्त वह खायेगा वह उसके बच्चों का ही होगा।

बातूनी अंडे

एक समय की बात है, एक स्त्री के दो लड़कियाँ थीं। एक का नाम था रोज़ और दूसरी का ब्लांची। रोज़ का स्वभाव बहुत बुरा था और ब्लांची का बहुत अच्छा। लेकिन माँ रोज़ को ही ज्यादा चाहती थी यद्यपि वह बुरी थी। कारण यह था कि रोज़ बिलकुल अपनी माँ की ही तरह थी। ब्लांची से माँ सभी तरह के काम कराया करती। चौका-बरतन, झाड़ू-बुहारी और खाना बनाने से ले कर बाजार से सामान लाना और कुएँ से पानी भरना सभी काम ब्लांची को ही करने पड़ते थे। और रोज़? वह तो आराम से बैठी ब्लांची पर हुक्म चलाया करती और हर समय नये-नये शृङ्गारों के बारे में ही सोचा करती।

एक दिन ब्लांची कुएँ पर पानी भरने गई। जब वह वहाँ पहुँची तो उसे जगत पर एक बूढ़ी औरत दिखाई पड़ी। औरत की उम्र बहुत ही ज्यादा थी और उसके सारे शरीर पर गहरी-गहरी झुर्रियाँ थीं। ब्लांची को देख कर उसने कहा : "मुझे बड़ी प्यास लगी है बेटी। थोड़ा पानी पिला दोगी।"

"हाँ बूढ़ी माँ, अभी देती हूँ," ब्लांची ने कहा।

एक बार कुएँ से पानी भर कर ब्लांची ने बाल्टी को अच्छी तरह रगड़-रगड़ कर धोया। फिर उसे कुएँ में डाल कर ताजा पानी निकाला और बूढ़ी स्त्री की ओर बढ़ाते हुए कहा :

"लो बूढ़ी माँ, जी भर कर पियो।"

पानी पी कर बूढ़ी माँ ने ब्लांची को हृदय से धन्यवाद देते हुए कहा :

"बेटी, तुम बहुत अच्छी लड़की हो। ईश्वर तुम्हारा सहायक होगा।" और वह जंगल की ओर चली गई।

कुछ दिनों बाद माँ ने ब्लांची को इतनी निर्दयता से मारा कि वह रोती हुई जंगल में भाग गई और एक पेड़ के नीचे बैठ कर अपने दुर्भाग्य पर आँसू बहाने

लगी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहाँ जाय, क्या करे। घर तो वह छोड़ ही आई थी इसलिए उस नरक में दुबारा जाने का प्रश्न ही नहीं था। यकायक उसने देखा कि वही बूढ़ी औरत, जिसको उसने एक दिन कुएँ पर पानी पिलाया था, धीरे-धीरे चलती हुई उसकी ओर आ रही है।

उसे रोते देख कर बुढ़िया बोली : "ओह, मेरी बेटी, तुम्हें क्या तकलीफ है? रो क्यों रही हो?"

"मुझे मेरी माँ ने बहुत मारा है, बूढ़ी माँ! और अब मैं लौट कर घर नहीं जाऊँगी।"

"तो मेरे साथ आओ, बेटी। मेरी झोपड़ी में ही रहना। मैं तुम्हें खाना दूँगी, बिस्तर दूँगी लेकिन इसके बदले में एक चीज़ तुमसे लूँगी। वह चीज़ है एक वादा कि तुम किसी को भी देख कर हँसोगी नहीं।"

और ब्लांची का हाथ पकड़ कर वह उसे अपनी झोपड़ी की ओर ले चली। रास्ते में बड़े अजीब-अजीब दृश्य देखने को मिले। काँटों भरी झाड़ियाँ उनके सामने खुलतीं और उनके गुज़र जाने पर अपने आप बन्द हो जातीं। कुछ दूर और चलने पर ब्लांची ने देखा कि दो कुल्हाड़ियाँ आपस में लड़ रही हैं। ब्लांची को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। वे आगे बढ़ती गईं। थोड़ी देर बाद ब्लांची को दो हाथ लड़ते हुए दिखाई पड़े। कुछ दूर और आगे चलने पर लड़ते हुए दो पैर और अन्त में लड़ते हुए दो सिर भी दिखाई पड़े। ब्लांची को देख कर दोनों सिरों ने कहा : "नमस्कार, ब्लांची! आओ, भगवान तुम्हारी सहायता जरूर करेगा।"

आखिरकार वे दोनों बूढ़ी औरत की झोपड़ी में पहुँच गईं। बुढ़िया ने ब्लांची से कहा : "आग तो जलाओ बेटी, फिर खाना बनाया जाय।"

यह कहते हुए बूढ़ी अँगीठी के पास बैठ गई और अपना सिर उठा कर घुटने पर रख लिया। ब्लांची को यह बहुत ही आश्चर्यजनक मालूम पड़ा लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। कुछ देर बाद बूढ़ी औरत ने अपना सिर ठीक जगह पर रख लिया

और ब्लांचो को एक बड़ी सी हड्डी देते हुए कहा : "लो, खाना बनाओ।"

ब्लांची ने हड्डी ले कर बरतन में रख दी और यह देख कर दाँतों तले उँगली दबा ली कि सारी बटलोई में बहुत अच्छा पका पकाया गोश्त भर गया है।

फिर बूढ़ी ने ब्लांची को धान का एक दाना कूटने को दिया। ब्लांची ने मूसल से कूटना शुरू ही किया था कि ओखली कूटे हुए चावलों से ऊपर तक भर गई। खाना खाने के बाद बूढ़ी औरत ने ब्लांची से कहा :

"बेटी, मेरी पीठ खुजला दो।"

ब्लांची ने उसकी पीठ तो जरूर खुजलाई लेकिन ऐसा करने में उसके हाथ बहुत कट फट गये क्योंकि बूढ़ी की पीठ पर छोटे-छोटे काँच के टुकड़े लगे हुए थे। जब उसने देखा कि ब्लांची के हाथ कट गये हैं और उनसे खून बह रहा है तो उसने सिर्फ उन्हें फूँक दिया और वे अच्छे हो गये।

दूसरे दिन सुबह जब ब्लांचो सो कर जगी तो बूढ़ी औरत ने उससे कहा :

"अब तुम्हें घर जाना चाहिए, बेटी। क्योंकि देखो, तुम एक अच्छी लड़की हो। मैं तुम्हें उपहार में बातूनी अंडे दे रही हूँ। मुर्गियों के दरबे में जाओ। वहाँ तुम्हें बहुत से अंडे पड़े हुए दिखाई पड़ेंगे। जो अंडा तुमसे कहे 'मुझे ले लो' उसे ज़रूर उठा लेना। और जो तुमसे कहे 'मुझे मत लो' उसे छूना तक नहीं। इसके बाद जब तुम घर जाने लगोगी तो रास्ते में उन अंडों को अपने पीछे फेंकती जाना जिससे कि वे गिर कर टूट जायें।"

बूढ़ी की बातों के अनुसार ब्लांची अंडों को रास्ते भर फोड़ती गई। जैसे ही वह एक अंडा फोड़ती उसके भीतर से एक न एक खूबसूरत चीज़ निकल पड़ती। कभी हीरा, कभी मोती, कभी सोना, कभी गाड़ी और कभी खूबसूरत वस्त्र। जब वह घर पहुँची तो उसके पास इतनी अधिक संख्या में अच्छी-अच्छी चीजें थीं कि सारा घर उनसे भर गया। यह देख कर माँ उससे बड़ी खुश हुई। पूछने पर ब्लांची ने सारी बातें सच-सच बता दीं।

दूसरे दिन माँ ने रोज़ से कहा : "रोज़ तुम भी जंगल में जा कर उसी बुढ़िया

को खोज निकालो। फिर तुम्हारे पास भी ऐसी ही कीमती चीजें हो जायेंगी।"

रोज़ जंगल में गई। उसे भी वही बुढ़िया मिली और उसने अपने साथ चलने का इशारा किया। लेकिन जब रोज ने कुल्हाड़ियों, हाथों, पैरों और सिरों को लड़ते हुए देखा और जब बुढ़िया अपना सिर उतार कर आराम करने लगी तो वह हँसने लगी। और हर एक चीज़ का मज़ाक उड़ाने लगी। यह देख कर बुढ़िया को दुख हुआ और उसने कहा :

"तुम अच्छी लड़की नहीं हो। भगवान तुम्हें सज़ा देगा।"

दूसरे दिन उसने रोज़ से कहा : "मैं तुम्हें खाली हाथ वापस नहीं जाने देना चाहती। इसलिए तुम मुर्गियों के दरबे में जाओ और जो अंडे तुमसे कहें 'मुझे ले लो' उन्हें ले लेना।"

रोज़ मुर्गियों के दरबे में गई। सभी अंडे एक साथ कहने लगे : "मुझे ले लो, मुझे मत लो, मुझे ले लो, मुझे मत लो।"

रोज़ सचमुच बुरी लड़की थी। उसने कहा : "तुम कह रहे हो कि 'मुझे मत लो' लेकिन मन ही मन चाहते हो कि मैं तुम्हें ले लूँ इसलिए मैं तुम्हें लूँगी।" और उसने वे सारे अंडे ले लिये जो कह रहे थे 'मुझे मत लो।' तब वह घर वापस लौट चली।

रास्ते में वह एक-एक अडा फोड़ती गई और उन अंडों में से साँप, मेंढ़क, बिच्छू, गोजर आदि जानवर निकल-निकल कर उसके पीछे चलने लगे। एक दो अंडों से तो बड़े-बड़े कोड़े भी निकले जो उसे पीटने लगे। बेचारी लड़की चिल्लाती हुई घर की ओर भागी। जब वह घर पहुँची तो इतनी थक गई थी और उसकी साँस इतनी ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी कि वह एक भी शब्द माँ से न कह सकी। और जब माँ ने उसके पीछे-पीछे आने वाले जानवरों की कतार और उसे मारने वाले कोड़े देखे तो उसे घर से बाहर निकाल दिया और कहा : "तुम्हारी इस घर में कोई जगह नहीं है। जाओ, जा कर जंगल में जैसे बने वैसे रहो।"

सच ही तो कहा है कि अच्छाई का फल अच्छा और बुराई का बुरा होता है।

जैक और उसकी लोमड़ी

एक था बूढ़ा। उसके तीन लड़के थे जैक, विलियम और टॉम। एक बार उसने तीनों बच्चों को अपने पास बुलाया और उनमें अपनी सम्पत्ति का बँटवारा कर दिया। हर एक को उसका उचित हिस्सा दे कर बूढ़े ने कहा : "देखना है कि तुममें से कौन सब से अमीर औरत से शादी करता है।"

विलियम और टॉम अपने पिता की यह बात सुन कर बहुत खुश हुए और एक ने एक कीमती कपड़े पहन कर बहुत धन-दौलत अपने साथ ले चल पड़े।

लेकिन जैक तो अजीब ही लड़का था। उसने अपने पिता से कहा : "मुझे आपका धन-दौलत नहीं चाहिए। मैं तो सिर्फ एक चीज़ चाहता हूँ। वह है आपकी पालतू लोमड़ी।"

विलियम और टॉम उसे अपने से नीचा समझते थे, इसलिए उसे वहीं छोड़ कर चले गये थे। वे नहीं चाहते थे कि जैक भी उनके पीछे-पीछे चले। उधर जैक खुद अपने भाइयों के इस रुख को जानता था। इसलिए वह अपनी लोमड़ी को साथ ले कर दूसरे रास्ते से चला। चलते-चलते सारा दिन बीत गया। शाम होने को आई तो उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई कि कहीं कोई जगह रात में ठहरने के लिए मिल जाय। दूर पहाड़ी पर उसे घास-फूस का बना हुआ एक झोपड़ा दिखाई पड़ा। उसने तय किया कि उसी झोपड़े में वह रात बितायेगा और उधर ही चल पड़ा।

उसके पास धन-दौलत तो कुछ था नहीं। थी सिर्फ एक लोमड़ी। सो उसी को साथ लिये दिये वह झोपड़े के सामने पहुँच कर पुकारने लगा : "कोई है अन्दर?"

जवाब में एक बहुत ही खूबसूरत बिल्ली बड़े शानदार ढंग से चल कर बाहर आई।

"इस घर का मालिक कौन है?" जैक ने पूछा।

"मैं और मेरा दोस्त चूहा," बिल्ली ने जवाब दिया।

"तुम?" जैक को बड़ा अचरज हुआ।

"हाँ, तुम्हें आश्चर्य हो रहा है?" बिल्ली बोली : "लेकिन असल में मैं बिल्ली नहीं हूँ।"

"फिर?"

"मैं पूर्व देश की राजकुमारी हूँ और यह चूहा मेरा छोटा भाई है। एक जादूगरनी ने नाराज़ हो कर मुझे बिल्ली और मेरे भाई को चूहा बना दिया है। लेकिन···"

"हाँ, हाँ, लेकिन क्या?" उसे रुकते देख कर जैक ने पूछा।

"अगर तुम यहाँ तीन दिन और तीन रात रह जाओ और किसी भी जानवर को भीतर न आने दो, यहाँ तक कि एक चूहे, छछूँदर, झींगुर या मक्खी को भी नहीं, तो मैं फिर अपनी असली हालत में वापस आ जाऊँगी।"

जैक ने अपनी लोमड़ी की पीठ थपथपा कर पूछा : "क्या कहती हो।"

"ठीक है, रुक जाओ," लोमड़ी ने जवाब दिया।

तब जैक ने बिल्ली से कहा : "मैं रुक जाऊँगा।"

अब जैक ने लोमड़ी को वहीं दरवाजे पर बैठा दिया। फिर एक पेड़ से उसने कुछ डालें काट कर डंडे बनाये। और तब दरवाजे पर डट कर बैठ गया। उस रात हाथी से ले कर चींटी तक अनेक जानवरों ने झोपड़ी में घुसने की कोशिश की लेकिन जैक ने किसी की भी एक न चलने दी।

दूसरे दिन सुबह जब वह झोपड़ी के अन्दर घुसा तो उसे बिल्ली कहीं पर न दिखलाई पड़ी। हाँ, फर्श पर एक बहुत खूबसूरत बच्ची ज़रूर बैठी थी। जैक को देखते ही बच्ची मुसकरा कर बोली—"हाँ, मैं ही कल की बिल्ली हूँ।"

जैक ने खूब जी भर कर नाश्ता किया और दिन भर का समय आराम से सो कर बिताया क्योंकि जानवर दिन में परेशान नहीं करते थे। सिर्फ रात में ही झोपड़ी के भीतर आने की कोशिश करते थे। और जब रात हुई तो वह कई लालटेनें और मोम-बत्तियाँ जला कर बैठ गया। और सारी रात साँप, चूहे और छछूँदरों को मारता रहा।

दूसरे दिन सुबह जब वह झोपड़ी में गया तो उसे उस बच्ची की जगह पर बहुत

खूबसूरत लड़की दिखाई पड़ी। नाश्ता करने के बाद वह बाहर आया और अप
लोमड़ी की पीठ थपथपाकर बोला : "क्या कहती हो ?"

"ठीक है, ठीक है, बहुत अच्छा।" लोमड़ी ने जवाब दिया और उस रात भी वह दरवाजे पर इस तरह जम कर बैठ गया कि उसने किसी भी जानवर को भीतर न जाने दिया। फिर जब सवेरा हुआ तो उसने पाया कि वह खूबसूरत लड़की बहुत ही आकर्षक युवती हो चुकी है। जैक बहुत खुश हुआ और उसी दिन दोनों ने शादी कर ली। फिर बग्घी तैयार की गई। उसमें घोड़े जोते गये और वे सब जैक के पिता के घर की ओर चल पड़े।

जब वे घर के निकट पहुँचे तो उन्हें बाजे गाजे की आवाज सुनाई पड़ी। जैक समझ गया कि विलियम और टॉम शादियाँ करके लौट आये हैं और उसी की खुशी में यह जशन हो रहा है। इसलिए जैक ने अपनी बग्घी को वहीं एक मोड़ पर रोक लिया और अपनी पत्नी से थोड़ी देर वहीं रुके रहने को कहा। तब उसने अपने पुराने कपड़े पहने और अपनी पालतू लोमड़ी को बगल में दबा कर अहाते में चला गया।

विलियम ने उसे देखते ही अपनी पत्नी को एक दरवाजे के पीछे कर दिया और टॉम ने अपनी पत्नी को चारपाई के नीचे घुसा दिया। बात यह थी कि दोनों ही नहीं चाहते थे कि उनकी पत्नियाँ गन्दे कपड़े पहने हुए जैक को देखें। उधर जैक ने इस स्थिति का मज़ा लेते हुए लोमड़ी को थपथपाया तो वह बोली : "वाह, वा! क्या कहने हैं?"

तब वह वापस उसी जगह लौट आया जहाँ अपनी पत्नी को छोड़ गया था। फिर अपने अच्छे से अच्छे कपड़े पहन बग्घी में शान से बैठ घोड़ों को हाँकता हुआ घर पहुँचा।

उसकी यह शान-शौकत देख कर विलियम और टॉम दोनों के मन में ईर्ष्या जग उठी और उन्हें इतनी शर्म लगी कि विलियम ने अपनी पत्नी को एक दरवाजे से बाहर कर दिया और टॉम ने अपनी पत्नी को दूसरे दरवाजे से। क्योंकि वे दोनों ही अमीर न थीं।

इस तरह जैक ने अपने दोनों भाइयों को, जो उससे प्रेम नहीं करते थे, हरा दिया, क्योंकि उसकी पत्नी बहुत अमीर थी।

कटी दुम

बहुत समय पहले एक आदमी जंगल में अकेला रहता था। उसके मकान में केवल एक कमरा था। वही उसका बैठने का कमरा था; उसी में वह सोता था, खाना बनाता और खाता था। गरज यह कि सारा काम वह उसी एक कमरे में करता था। कमरे के एक कोने में एक बहुत बड़ी खुली हुई अँगीठी थी जो रसोई घर का काम देती थी। उसी अँगीठी पर वह खाना बनाता और वहीं बैठ कर खा लेता।

एक रात जब वह खाना बना कर खा चुका और अपने बिस्तर पर आराम करने चला गया तब लट्ठों के बीच के सूराखों में से एक बड़ा अजीब जानवर अंदर घुस आया। उसकी बड़ी लम्बी-सी दुम थी। आदमी ने उसकी दुम देखी तो कुल्हाड़ी उठा कर एक ही झटके से उसे अलग कर दिया। बेचारा जानवर जिस तरह भीतर आया था उसी तरह बाहर चला गया—अपनी कटी हुई दुम कमरे के अन्दर छोड़ कर। आदमी ने अँगीठी जला कर दुम को पका कर खा लिया और पेट पर हाथ फेरता हुआ लेट गया। थोड़ी देर में ही उसे नींद आ गई।

उसे सोये हुए थोड़ी ही देर हुई थी कि खड़-खड़ सुन कर उसकी आँखें खुल गईं। उसे लगा कि कोई जानवर उसके घर की छत पर चढ़ रहा है; जैसे कोई बिल्ली हो। पंजों से खुरचने की आवाज़ भी उसके कानों में पड़ी और तब धीरे-धीरे आती हुई यह आवाज़ :

"काट गिराई अभी यहीं पर मेरी अच्छी दुम
भला चाहते हो तो कर दो वापस जल्दी तुम।"

आदमी के पास तीन कुत्ते थे। एक का नाम था 'पूनो', दूसरे का 'इनो' और तीसरे का 'कैम्टिको कैलिको'। बाहर से आती हुई आवाज़ सुन कर आदमी ने अपने कुत्तों को जगाया और उन्हें उस जानवर के पीछे लुहा दिया। कुत्ते उसे दूर जंगल तक खदेड़ आये। इसी बीच आदमी फिर सो गया।

आधी रात में खड़खड़ाहट सुन कर उसकी आँखें फिर खुलीं। उसे लगा कि कोई जानवर उसके घर की छत पर चढ़ रहा है : जैसे कोई बिल्ली हो। पंजों से खुरचने की आवाज़ भी उसके कानों में पड़ी और तब धीरे-धीरे आती हुई यह आवाज़ :

"काट गिराई अभी यहीं पर मेरी अच्छी दुम
भला चाहते हो तो कर दो वापस जल्दी तुम।"

आदमी उठ कर बिस्तर पर बैठ गया और उसने अपने कुत्तों को बुलाया। कुत्तों ने निकल कर फिर उस जानवर का पीछा किया। चहारदीवारी के पास वह उन्हें दिखाई पड़ा तो उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश में सारी चहारदीवारी ही तोड़ फोड़ डाली और इस बार उसे दूर दलदल तक खदेड़ दिया। इस बीच आदमी फिर पड़ कर सो गया।

रात के तीसरे पहर खड़खड़ाहट सुन कर उसकी आँख फिर खुल गई। उसे लगा कि फिर कोई जानवर उसके घर की छत पर चढ़ रहा है, जैसे कोई बिल्ली हो। पंजों से खुरचने की आवाज़ भी उसके कानों में पड़ी और तब धीरे-धीरे आती हुई यह आवाज़ :

"काट गिराई अभी यहीं पर मेरी अच्छी दुम
भला चाहते हो तो कर दो वापस जल्दी तुम
वरना कह देता हूँ सुन लो कान खोल कर बात
मुझसे बुरा न होगा कोई मैं हूँ अपनी घात।"

आदमी फिर उठ कर बैठ गया और उसने कुत्तों को पुकारा। किन्तु बहुत पुकारने पर भी इस बार कुत्ते न आये। बात यह थी कि पिछली बार वह जानवर कुत्तों को दौड़ाता हुआ दलदल तक ले गया था। तीनों कुत्ते उसी दलदल में फँस कर रह गये थे और फिर वापस नहीं लौट पाये थे। आदमी अपने कुत्तों पर नाराज़ होता हुआ फिर सो गया।

सूरज निकलने से थोड़ा पहले फिर वही खड़खड़ाहट हुई और आदमी जाग

पड़ा। उसे लगा कि कोई जानवर उसकी चारपाई के नीचे घुस रहा है; जैसे कोई बिल्ली हो। ध्यान से सुनने पर पंजों से खुरचने की आवाज़ भी सुनाई पड़ी। आदमी ने झाँक कर नीचे देखा तो दो तिकोने कान दिखाई दिये और एक क्षण बाद दो गोल जलती हुई आँखें दिखाई दीं। वे आँखें उसी को घूर रही थीं। उसने चाहा कि वह अपने कुत्तों को पुकारे लेकिन डर के मारे उसकी घिग्घी बँध गई। वह

जानवर धीरे-धीरे उसकी तरफ खिसकता गया। यहाँ तक कि बिलकुल उसके ऊपर चढ़ गया। और तब उसने बहुत धीमी आवाज़ में कहा :

"काट गिराई अभी यहीं पर मेरी अच्छी दुम
भला चाहते हो तो कर दो वापस जल्दी तुम।"

सहसा आदमी की जबान खुल गई और उसने जवाब दिया : "मेरे पास तुम्हारी दुम नहीं है।"

इस पर उस जानवर ने कहा : "हाँ, तुम्हारे ही पास है।" यह कह कर जानवर उस पर झपट पड़ा और उस आदमी के टुकड़े-टुकड़े कर दिये। और कुछ लोग कहते हैं कि जानवर को अपनी दुम मिल गई।

यह कहानी बहुत दिन पहले की है। उस आदमी का घर कभी का नष्ट हो चुका है लेकिन आसपास रहने वाले आदमी बतलाते हैं कि अब भी जब चाँद की रोशनी खूब तेज़ होती है और घाटी में हवा बड़ी तेज़ी से चला करती है तब एक आवाज़ सुनाई पड़ती है :

"काट गिराई अभी यहीं पर मेरी अच्छी दुम
भला चाहते हो तो कर दो वापस जल्दी तुम।"

और फिर अपने आप खामोशी में डूब जाती है।

टेढ़े मुँह का परिवार

किसी जगह पर एक आदमी रहता था। उसकी एक पत्नी और कई बच्चे थे। उस परिवार में विशेष बात यह थी कि केवल एक बच्चे को छोड़ कर बाकी सब के मुँह टेढ़े थे। जिसका मुँह टेढ़ा नहीं था, उसका नाम था जॉन।

जब जॉन बड़ा हुआ तो माता पिता ने ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिए उसे दूसरे शहर के एक कालेज में भेजा। पहली छुट्टियों में जब वह घर लौट कर आया तो सभी उसे घेर कर बैठ गये और कालेज की सारी बातें खोद-खोद कर पूछने लगे। इसी तरह बातें करते कराते काफी रात हो गई। आखिरकार उन लोगों ने तय किया कि अब सोना चाहिए। बच्चों की माँ ने पिता से कहा : "ज़रा तुम चिराग बुझा दोगे ?"

"जरूर बुझा दूँगा," पिता ने जवाब दिया।

"काश, तुम बुझा सकते !" माँ बोली।

"क्यों नहीं बुझा सकूँगा। अभी बुझाता हूँ।" पिता ने कहा।

और उसने चिराग पर फूँक मारी, लेकिन उसका मुँह तो टेढ़ा था इसलिए हवा जो निकली तो ऊपर चली गई, और बत्ती ज्यों की त्यों जलती रही। उसने फिर फूँका लेकिन फूँक फिर ऊपर चली गई और चिराग नहीं बुझा। इसी तरह कई बार कोशिश करने के बाद हार कर उसने बच्चों की माँ से कहा : "तुम नहीं बुझा सकतीं इसे ?"

"अभी बुझाती हूँ।" माँ बोली।

"काश, तुम बुझा सकतीं !" पिता ने कहा।

"क्यों नहीं बुझा सकूँगी, लो बुझाती हूँ।"

और उसने चिराग़ पर फूँक मारी। लेकिन उसका मुँह तो टेढ़ा था इसलिए हवा जो निकली, सो नीचे चली गई और बत्ती ज्यों की त्यों जलती रही। उसने फिर

फूँका, लेकिन फूँक फिर नीचे चली गई, और चिराग़ नहीं बुझा। इसी तरह कई बार कोशिश करने के बाद हार कर उसने अपनी लड़की से कहा : "मेरी, बत्ती बुझा दो।"

"बुझाती हूँ।"

"काश, तुम बुझा सकतीं!"

"क्यों नहीं बुझा सकती, अभी बुझाती हूँ," लड़की ने कहा।

और उसने चिराग़ पर फूँक मारी। लेकिन उसका मुँह तो टेढ़ा था सो हवा दाहिनी बगल में चली गई, और बत्ती ज्यों की त्यों जलती रही। उसने फिर फूँका लेकिन फिर फूँक दाहिनी ओर चली गई। कई बार कोशिश करने पर भी चिराग नहीं बुझा। उसने हार कर अपने भाई से कहा : "डिक, ज़रा तुम चिराग बुझा दोगे ?"

"ज़रूर बुझा दूँगा।" डिक ने जवाब दिया।

"काश, तुम बुझा पाते !"

"क्यों नहीं बुझा पाऊँगा। लो अभी बुझाता हूँ।"

और डिक ने चिराग पर फूँक मारी। लेकिन उसका मुँह तो टेढ़ा था सो हवा बाईं ओर चली गई और बत्ती जलती रही। उसने फिर फूँका लेकिन फूँक फिर बाईं ओर चली गई। कई बार कोशिश करने पर भी चिराग नहीं बुझा। हार कर उसने जॉन से बत्ती बुझाने के लिए कहा।

"बुझाये देता हूँ।" जॉन ने कहा।

"काश, तुम बुझा पाते !"

"क्यों नहीं बुझा पाऊँगा, लो बुझाये देता हूँ।"

और जॉन ने फूँक मारी। उसका मुँह सीधा था इसलिए पहली ही फूँक बत्ती पर पड़ी और वह बुझ गई।

आखिरकार चिराग बुझ ही गया। पूरे परिवार को बड़ा सन्तोष हुआ कि जॉन चिराग बुझाने में सफल हो गया और पिता ने गहरी साँस ले कर कहा : "सचमुच कालेज में पढ़ना कितना अच्छा है, बत्ती बुझाना तक आ जाता है !"

———

साझे की खेती

भालू और खरगोश दो दोस्त थे। दोनों ही किसान थे। भालू अमीर किसान था। उसके पास सैकड़ों एकड़ खूब उपजाऊ ज़मीन थी। उसके मुकाबले में बेचारा खरगोश बहुत गरीब था। उसके पास न तो इतनी ज़्यादा ज़मीन थी और न जो थोड़ी सी ज़मीन उसके पास थी वह इतनी उपजाऊ ही थी। भालू था होशियार, अपनी ज़मीन पर गन्ने की खूब खेती करता। रहा बेचारा खरगोश, सो उसके घर में बच्चों की पैदावार बढ़ रही थी। हालत यहाँ तक पहुँची कि उसके दर्जनों बच्चे हो गये। धीरे धीरे समय बीतता गया और वे बड़े भी होने लगे। तब खरगोश को लगा कि अगर उसके पास और ज़्यादा ज़मीन न होगी तो वह और उसका परिवार भूखों मर जायगा।

यह सब सोचने विचारने के बाद वह भालू के पास पहुँचा और उससे बड़ी नम्रतापूर्वक बोला : "नमस्कार भालू भाई, मुझे तुमसे एक बड़ा ज़रूरी काम है।"

भालू ने उसके अभिवादन का उत्तर देते हुए कहा : "कहो, क्या काम है?"

"मेरा परिवार बहुत बढ़ गया है, और जितनी ज़मीन मेरे पास है उससे मेरा गुज़ारा नहीं हो पाता। इसलिए मैं चाहता हूँ कि अपनी थोड़ी सी ज़मीन आप मुझे बँटाई पर दे दें।"

बड़ी गम्भीरतापूर्वक सिर हिला कर भालू ने 'हुँह' किया, फिर कहा : "यह तो तुमने बड़ी गम्भीर समस्या मेरे सामने पेश कर दी, खरगोश भाई। मेरी सारी ज़मीन उठी हुई है। समझ में नहीं आता कि मैं कैसे तुम्हारी मदद करूँ। लेकिन यह तुम्हारा सवाल है, कोई और होता तो साफ इनकार कर देता। तुम्हारे लिए तो मुझे कुछ न कुछ करना ही पड़ेगा।"

"अपनी ज़मीन तुम किस शर्त पर उठाते हो?" खरगोश ने पूछा।

"सिर्फ साझे पर", भालू ने जवाब दिया।

"और तुम्हारा साझा क्या होता है ?"

"जब फसल तैयार हो जाती है तो पौदों का ऊपर का हिस्सा मैं ले लेता हूँ, और नीचे का हिस्सा खेत जोतने वाले का हो जाता है। मेरी यही शर्त तुम्हारे साथ भी होगी।"

बड़ी देर तक खरगोश इस प्रस्ताव पर सोचता रहा, तब बोला : "अच्छा भालू भाई, मैं तुम्हारी बात मंजूर करता हूँ। अगले हफ्ते से हम ज़मीन पर काम शुरू कर देंगे।"

खुशी खुशी खरगोश घर लौटा और भालू के साथ हुए समझौते को सविस्तार कह सुनाया। पूरा परिवार यह सुन कर बड़ा खुश हुआ और अपने भाग्य को सराहने लगा।

ठीक समय पर उन लोगों ने खेत पर काम शुरू कर दिया।

मई का महीना आया। फसल तैयार हो गई तो खरगोश ने अपने बड़े लड़के को भालू के पास भेजा कि भालू आ जाय तो दोनों का हिस्सा बाँट हो।

धीरे धीरे आराम से चलता हुआ भालू खेत पर पहुँचा तो उसने देखा कि फसल खूब लहलहा रही है और खरगोश मेड़ से टिका हुआ खड़ा है।

"नमस्ते, भालू भाई।" भालू को देख कर खरगोश मुसकराते हुए बोला : "देखो कितनी अच्छी फसल हुई है।"

सिर हिला कर गम्भीरतापूर्वक भालू ने कहा : "हुँह !"

"अब जैसा हम लोगों में तय हुआ था," खरगोश ने फिर कहा : "ऊपर का हिस्सा तुम लोगे और नीचे का मैं। लेकिन तुम अपना हिस्सा ले कैसे जाओगे ? मैं चाहता हूँ कि अपने आलू मैं आज ही ले जाऊँ।"

भालू का पारा एकदम चढ़ गया, लेकिन बेचारा क्या करता। उसने ही तो खरगोश से यह समझौता किया था। नाराज़ होता और पाँव पटकता हुआ वह वापस लौट गया। खरगोश से उसने यह भी नहीं बताया कि अपने हिस्से के पते वह कैसे और कब ले जायेगा। लेकिन खरगोश ने मौका चूकना नहीं सीखा था। अपने पूरे

परिवार के साथ वह आलू खोदने में जुट गया।

जब जाड़े की फसल बोने का मौका आया तो खरगोश ने सोचा कि एक बार फिर भालू के पास जा कर उसके खेत लेने की कोशिश करनी चाहिये। यह सोच कर वह भालू के पास पहुँचा और बड़ी नम्रतापूर्वक उससे बोला : "नमस्कार, भालू भाई!"

"नमस्कार!" भालू ने गुर्राते हुए कहा : "कहो, क्या काम है?"

"मैं तुमसे यही पूछने आया था कि अपने खेत इस फसल में मुझे दोगे?"

उसी तरह गुर्रा कर भालू ने जवाब दिया : "पिछली फसल में तुमने मुझे इतना गहरा धोखा दिया था कि मैं तुम्हें अपने खेत देने की सोच तक नहीं सकता। बहुत बड़े बेईमान हो तुम।"

काफी सोचने के बाद खरगोश बोला : "ओह, भालू भाई, तुम जानते हो मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया, बल्कि तुमने खुद अपने को धोखा दिया।"

"कैसे?" भालू ने पूछा।

"देखो, तुम्हीं ने अपनी शर्त मेरे सामने रक्खी थी। मैंने तो सिर्फ तुम्हारी बात मान ली थी। तुमने कहा था कि तुम पौदों का ऊपरी हिस्सा लोगे, जो मैंने तुम्हें दिया। दिया कि नहीं? तो तुम्हीं बताओ मैंने बेइमानी कब की? अब अगर तुम चाहो तो शर्त बदल कर ज़मीन मुझे दे दो।"

कुछ सोचने विचारने के बाद भालू बोला : "एक शर्त पर मैं तुम्हें ज़मीन दे सकता हूँ।"

"क्या?" खरगोश ने पूछा।

"यही कि जब फसल तैयार हो जाये तो पौदों का ज़मीन के ऊपर वाला हिस्सा तुम लेना, और ज़मीन के भीतर का मेरा होगा।"

खरगोश ने कहा : "बहुत अच्छा। चूँकि मेरा परिवार बहुत बड़ा है और अपने बच्चों को भरपेट खाना देने के लिए ज़रूरी है कि मेरे पास ज्यादा ज़मीन हो। इसलिए तुम्हारी यह शर्त भी मुझे मंजूर है। हम लोग फौरन जुताई शुरू कर देंगे।"

खुशी खुशी मुँह से सीटी बजाता हुआ वह घर लौटा। उसे पूरा विश्वास था कि उसने इस बार भी बहुत अच्छा सौदा किया है।

जब फसल तैयार हुई तो उसने पहली बार की तरह अपने बड़े लड़के को भालू के घर भेजा कि वह आ कर अपना हिस्सा ले ले। भालू जब खेत पर पहुँचा तो खरगोश बोला : "नमस्कार, भालू भाई, देखो कितनी अच्छी फसल तैयार हुई है! मैं सोचता हूँ कि चालीस 'बुशेल' (एक बुशेल = लगभग १५½ वर्गफुट अनाज)

फी एकड़ पैदावार तो जरूर हुई होगी। इस बार तो मैं अपने जौ बाजार में बेचने ले जाऊँगा। मैं अभी ज़मीन के ऊपर के पौदे काट लेता हूँ, तब तुम ज़मीन खोद कर अपना हिस्सा ले लेना।"

भालू तो क्रोध से एकदम पागल हो गया लेकिन उसका गुस्सा किस काम आ सकता था। वह समझ गया कि खरगोश ने उसे फिर चकमा दिया है। और वह बड़ी गम्भीरतापूर्वक सोचने लगा कि वह खरगोश से किस तरह बदला ले। इसलिए उसने मुसकरा कर कहा : "सचमुच बड़ी अच्छी फसल हुई है, खरगोश भाई! मेरे हिस्से को तुम अभी ज़मीन में ही रहने दो, लेकिन यह तो बताओ कि अगली फसल में भी तुम खेत लोगे कि नहीं?"

"खेतों की ज़रूरत तो मुझे पड़ेगी ही।" खरगोश ने जवाब दिया : "इसके अलावा अपने परिवार का पेट पालने का कोई रास्ता भी तो नहीं है मेरे पास।"

"ठीक है, ठीक है," भालू बोला : "लेकिन यह समझ लो कि अपने हिस्से में मैं पौदों का ऊपर का हिस्सा भी लूँगा और ज़मीन के नीचे का हिस्सा भी, और बीच का हिस्सा तुम्हारा होगा।"

खरगोश को लगा कि इस बार भालू ने उसे मात दे दी है। सहसा उसकी समझ में न आया कि वह क्या कहे। किसी तरह वह बोल पाया : "लेकिन भालू भाई, अगर तुम ऊपर का हिस्सा भी लोगे और ज़मीन के नीचे का भी, तो मुझे क्या मिलेगा?"

"क्यों? बीच का हिस्सा तो मिलेगा!" भालू ने कहा।

खरगोश ने बड़ी मिन्नत की, भालू से कहा कि कुछ रहम करे, लेकिन भालू को न उसकी बात माननी थी और न उसने मानी। उसने साफ साफ कह दिया : "भई, मैंने अपनी शर्त तुम्हें बता दी, मन चाहे खेत लेना, नहीं तो रहने देना।"

और हार कर खरगोश ने इसी शर्त को मान लिया।

जब फसल तैयार होने का मौसम आया तो भालू ने तय किया कि इस बार वह खरगोश के बुलाने का इंतजार नहीं करेगा। वह खेत की ओर चल पड़ा और रास्ते

भर सोचता रहा : "पहली फसल में मैंने खरगोश को खेत दिया और कहा कि मैं पौदों का ऊपरी हिस्सा लूँगा। खरगोश ने आलू बोये और मुझे पत्तों के अलावा कुछ नहीं मिला। दूसरी फसल में खेत मैंने फिर उसे दिया, कहा कि मैं इस बार नीचे का हिस्सा लूँगा और वह ऊपर का; तो खरगोश ने जौ बो दिया, मुझे कुछ न मिला। लेकिन इस बार मैं सारी कसर निकाल लूँगा। इस बार मैं ऊपर का हिस्सा भी लूँगा और नीचे का भी और उस बदमाश को सिर्फ़ बीच का हिस्सा मिलेगा। इस बार ज़रूर उसे अपनी करनी का फल मिल जायेगा।"

उसी समय वह खेत के पास पहुँचा और मेड़ पर रुक गया। फ़सल की ओर एक दृष्टि डाली। देखते ही गुस्से से चेहरा लाल हो गया। मुट्ठियाँ खुद ही कस गईं। खरगोश को गालियाँ देता हुआ बोला : "बदमाश, इस बार तो सिर्फ़ गन्ना बोया है सुअर ने!"

जैक और यमदूत

किसी गाँव में एक आदमी रहता था। उसका नाम था जैक। वह बड़ा निर्दयी था। अपनी पत्नी तथा बच्चों के साथ कुत्तों का सा व्यवहार करता था। दिन भर शराब पीते रहने के अलावा उसे और कोई काम न था। कोई लाख समझाये लेकिन उस पर कोई असर नहीं पड़ता था। रोज़ाना वह इतनी शराब पीता कि उसके होश हवास दुरुस्त न रह जाते। धीरे धीरे बात यहाँ तक पहुँची कि शराब ने उसका शरीर खोखला कर डाला और तब एक दिन यमदूत उसे लेने आ पहुँचा। उसे देख कर जैक इतना डरा कि उसकी घिग्घी बँध गई और वह थर थर काँपने लगा। उसने यमदूत से कहा : "मुझे कुछ समय के लिए और ज़िन्दा रह लेने दो।"

यमदूत ने कहा : "नहीं, नहीं, मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता।"

यमदूत ने जैक को पकड़ा और तेज़ी से चल दिया। थोड़ी देर चलने के बाद रास्ते में एक बड़ी दुकान पड़ी।

जैक ने कहा : "यमदूत साहब, कुछ खाइएगा नहीं ?"

यमदूत ने कहा : "खाना तो मैं ज़रूर चाहता हूँ लेकिन छोटे सिक्के मेरे पास नहीं हैं। असल में वहाँ छोटे सिक्कों की ज़रूरत ही नहीं पड़ती।"

इस पर जैक ने कहा : "मैं आपको बताता हूँ यमदूत साहब, कि क्या करना चाहिए। देखिए, मेरे पास दस सेंट वाला एक सिक्का है और आप ठहरे यमदूत। आप आसानी से अपने को दस सेंट वाले दूसरे सिक्के में बदल सकते हैं। इस तरह हम लोगों के पास दस सेंट वाले दो सिक्के हो जायेंगे और हम लोग छक कर खाना खायेंगे। इसके बाद आप फिर अपनी असली हालत पर आ जाइयेगा।"

यमदूत को भी यह सलाह पसन्द आ गई और उसने अपने को दस सेंट वाले सिक्के में बदल लिया। लेकिन जैक भी एक ही चालाक था। यमदूत जैसे ही सिक्का बना, उसने उसे फटाक से अपनी डायरी में रख लिया। यह डायरी यमदूत के सामने

उसने नहीं निकाली थी क्योंकि उसे खोलने की तरकीब वह यमदूत को नहीं बता चाहता था। डायरी पर एक क्रास जड़ा था। उसी से डायरी खोली जा सकती थी

लेकिन बेचारे यमदूत को तो यह नहीं मालूम था। वह डायरी के अन्दर भड़भड़ाने और बाहर निकलने की कोशिश करने लगा। परन्तु क्रास को पार कर सकना उसके लिए संभव नहीं था। यमदूत मिन्नत करने लगा कि मुझे छोड़ दो। लेकिन जैक बड़ी चालाकी से तो उसे पकड़ पाया था, बोला : "अरे वाह, छोड़ कैसे दूँ ? बड़ी मुश्किल से तो पकड़ पाया हूँ।"

इस पर यमदूत क्रोध से बकने लगा कि मैं छूटते ही तुम्हें तरह-तरह की यंत्रणायें दूँगा, लेकिन जैक था कि टस से मस न हुआ। तब वह गिड़गिड़ा कर भीख सी माँगने लगा : "मुझे छोड़ दो, मुझे छोड़ दो।"

लेकिन उसकी बातों पर कोई ध्यान न दे कर जैक घर जाने को मुड़ा तब यमदूत ने कहा : "जैक, अगर तुम मुझे छोड़ दो तो मैं तुम्हें पूरे एक बरस और जिंदा रहने दूँगा। मुझे छोड़ दो, जैक ! मेरी बीवी बहुत आलसी है। अब तक उसने चूल्हे में लकड़ी भी नहीं लगाई होगी और अगर मैं घर पहुँच कर खाना नहीं बनाऊँगा तो हम भूखों मर जायेंगे।"

जैक ने अपने मन में सोचा : 'मैं इसे छोड़ दूँ तो एक साल का मौका मिल जायेगा। इस अवधि में मैं रोज़ गिरजे जाया करूँगा और धार्मिक काम करता रहूँगा।' उसने यमदूत से कहा : "यमदूत साहब, मैं आपको छोड़ तो सकता हूँ लेकिन इस शर्त पर कि अगले बारह महीनों तक तुम अपनी शकल नहीं दिखाओगे।"

यमदूत ने वादा कर लिया और जैसे ही जैक ने डायरी का खटका खोला वह गायब हो गया। जैक ने सोचा : 'अब मेरे पास बारह महीने का समय है। पादरी के पास जा कर मैं अपने पापों को स्वीकार करूँगा और धर्म का कट्टर अनुयायी बन जाऊँगा !···लेकिन जल्दी क्या है ? आखिरी छह महीनों में यह सब करूँगा। ऐं, वह मेरा दस सेंट का सिक्का कहाँ है। तलब लगी है, पिये बिना कैसे काम चलेगा ?'

पलक झपकते छह महीने गुज़र गये। तब जैक सोचने लगा कि अपने पापों को स्वीकार करके धर्म के अनुयायी बनने को सिर्फ एक महीना काफी होगा। अभी से क्या जल्दी है। अभी तो मैं कुछ मौज पानी और कर लूँ।

धीरे धीरे पाँच महीने और बीत गये लेकिन जैक का वही क्रम जारी रहा। तब केवल एक हफ्ते का समय और रह गया। लेकिन यह हफ्ता भी यों ही बीत गया और जैक ने पादरी के सामने न तो अपने पापों को स्वीकार ही किया और न धार्मिक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति ही बना। निश्चित दिन पर यमदूत फिर आ गया। जैक को अब उसकी बात माननी ही थी। यमदूत उसे ले कर चल पड़ा। चलते चलते वे एक सेब के पेड़ के पास पहुँचे।

"यमदूत साहब, आप कुछ सेब खायेंगे?" जैक ने यमदूत से पूछा।

"अगर तुम चाहो तो अपने लिए तोड़ सकते हो," यमदूत ने कहा : "मैं नहीं खाऊँगा। तुम्हीं खाओ।"

और वह रुक कर पेड़ की तरफ देखने लगा। "मेरे पैर में मोच आ गई है, और मैं पेड़ पर नहीं चढ़ सकता," जैक ने कहा : "तुम एक डाल पकड़ लो मैं तुम्हें ऊपर को उठा दूँगा। फिर तुम डाल पर पहुँच कर मनमाने सेब खाते रहना।"

और जैक ने यमदूत को पेड़ की एक डाल पर चढ़ा दिया। वह वहाँ पहुँच कर पके हुए सेबों को खोजने लगा। अब जैक ने झट अपनी जेब से एक तेज़ चाकू निकाला और जहाँ यमदूत बैठा था वहीं पर डाल में गहरा गड्ढा कर दिया। गड्ढा क्रॉस की तरह का था। यह देख कर यमदूत चिल्लाने लगा :

"जैक, ऐसा मत करो नहीं तो नीचे उतर कर मैं तुम्हें कच्चा चबा जाऊँगा।"

लेकिन डाल पर तो क्रॉस बना था और यमदूत क्रॉस लाँघ कर नीचे नहीं उतर सकता था। जैक घास पर बैठ गया और यमदूत को भुन्नाते, क्रोध करते हुए देखने लगा! पूरी रात वह वहीं बैठा रहा। फिर सवेरा हो गया और अधिक बेचैन हो कर यमदूत ने उससे कहा : "जैक, इस क्रॉस को हटाओ और मुझे नीचे उतार लो। मैं तुम्हें एक साल का समय और दूँगा।"

"मुझे कुछ नहीं चाहिये," जैक ने कहा। और वह आराम से हाथ पैर फैला कर घास पर लेट गया। जब दोपहर झुकने लगी तब यमदूत ने उससे कहा : "जैक, इस क्रॉस को हटाओ, और मुझे नीचे उतारो। मैं तुम्हें दस साल और दे दूँगा।"

"नहीं जनाब," जैक ने उत्तर दिया : "इतनी छोटी शर्त पर मैं आपको छोड़ नहीं सकता। अगर आप वादा कीजिये कि आप जिन्दगी भर मुझे परेशान नहीं करेंगे तो मैं आपको नीचे उतार सकता हूँ।"

यमदूत ने देखा कि जैक अपनी बात पर पत्थर की तरह अड़ा हुआ है, तो वह राज़ी हो गया। उसने कसम खाई कि अब वह कभी जैक को लेने नहीं आवेगा! तब जैक ने क्रॉस को मिटा दिया और यमदूत एक भी शब्द बोले बिना चला गया।

अब जैक को कोई डर न था। उसने अपने पाप स्वीकार करने और धर्मपालन करने का इरादा भी छोड़ दिया क्योंकि यमदूत के आने की कोई आशंका न थी। फिर वह ऐसी किसी जगह पर नहीं जाता था, जहाँ उसे शराब न मिल सके। और भला गिरजे में कहीं शराब मिलती है?

धीरे धीरे काफी समय गुज़र गया। जैक बूढ़ा हो गया और एक दिन मर गया। मरने के बाद वह स्वर्ग के दरवाज़े पर पहुँचा। दरबान ने उससे पूछा कि वह कौन है तो जैक ने अपना परिचय देते हुए अन्दर जाने की आज्ञा माँगी।

दरबान ने घुड़क कर जवाब दिया : "भाग जाओ यहाँ से। स्वर्ग तुम जैसे लोगों के लिए नहीं बना है।"

तब जैक नरक के दरवाज़े पर पहुँचा। लेकिन जब उस यमदूत को पता चला कि जैक आया है तो उसने अपने भूतों को बुला कर आगाह किया : "यह आदमी बड़ा बदमाश है, इसने मेरे साथ बहुत बुरा व्यवहार किया था। इसलिए उसे यहाँ मत आने देना। उससे कह दो कि वह जहाँ से आया है वहीं लौट जाये।"

भूतों ने जब जैक से यही बात कही तो जैक ने जवाब दिया : "मैं नहीं पहुँच सकता। इतने अँधेरे में रास्ता भी सूझेगा मुझे कि मैं चला ही जाऊँगा?"

इसपर यमदूत ने जलती हुई आग से एक लकड़ी उठाई जो मशाल की तरह जल रही थी। उसे जैक को पकड़ाते हुए उसने कहा : "लो, और अब कभी अपनी शक्ल यहाँ मत दिखाना।"

और जैक एक बार फिर धरती का वासी हो गया।

शैतान की शादी

बहुत दिनों पहले एक लड़की रहती थी। उसका कहना था कि वह तब तक शादी नहीं करेगी जब तक कि राजकुमारों की तरह बल्कि उनसे भी अच्छी तरह से सजा हुआ कोई आदमी नहीं मिलेगा। एक बार उसके पिता ने एक दावत दी। इस दावत में एक आदमी आया जो परीदेश के राजाओं की तरह सजा हुआ था। जब वह फाटक पर ही था तभी पिता ने अपने लड़के को उसे लाने के लिए भेज दिया। आदमी ने आते ही नमस्कार किया। पिता ने उसके अभिवादन का उत्तर दिया।

"मैं देखता हूँ कि आपको कुछ मदद की ज़रूरत है," आये हुए नौजवान व्यक्ति ने कहा।

"हाँ, आज मेरे यहाँ दावत है। अच्छा होगा अगर तुम उधर की तरफ जा कर मेरे लड़कों बच्चों का साथ दो।"

नौजवान उधर की ओर चल दिया।

बूढ़े की लड़की ने अपना साथी इसी आगन्तुक को चुना। सब लोग नृत्य करने लगे। लड़की के बारहवर्षीय छोटे भाई ने एकाएक कहा : "जीजी, जीजी, तुम इस आदमी के पैर नहीं देख रही हो?"

"क्या बात है?" बहन ने पूछा।

"कुछ नहीं जीजी, बात सिर्फ इतनी है कि इस आदमी के पैर अजीब तरह से फूले हुए हैं। जब वह नाचने लगे तो इस बात पर ध्यान देना। अच्छा हो अगर तुम इस बात के बारे में माँ से पूछ लो।"

जीजी ने उस आदमी से पूछा : "दोस्त, तुम्हारे पैरों को क्या हो गया है?"

"कुछ नहीं, मैं आग में गिर गया था उसी से मेरे पैर जल गये।" बहन से नौजवान ने कहा। सब लोगों के साथ वे फिर नाचने लगे। कुछ देर नाचने के बाद भाई ने बहन से फिर कहा : "बहन, देखो इस आदमी के हाथ कैसे छोटे छोटे और

सूजे हुए हैं। अच्छा हो, अगर तुम इसके बारे में माँ से बात कर लो।"

बहन ने माँ से तो नहीं, उसी आदमी से पूछा कि उसके हाथों को क्या हो गया है। नौजवान ने बतलाया कि जब वह बहुत छोटा था, तभी एक साबुन के कड़ाहे में गिर पड़ा था, जिससे उसके दोनों हाथ वैसे हो गये।

जब नाच खतम होने को आया तो बहन और उस नौजवान की शादी होना तय हुआ। नौजवान ने कहा कि वह रुक नहीं सकता और उसी दिन लौट जायेगा। उसी दिन दोनों की शादी हो गई। लड़की ने अपने पति से कहा : "अपने छोटे भाई को मैं साथ ले चलना चाहती हूँ। एकदम अनजानी जगह में मुझे जाना है। कोई जान पहचान का आदमी साथ रहेगा तो मेरा मन भी लगा रहेगा।"

पति ने भाई को ले चलने की अनुमति दे दी।

एक बग्घी में वे तीनों जा बैठे—बहन और उसका भाई भीतर तथा पति बाहर। बग्घी चल पड़ी। उसके चलते ही भाई ने बहन से कहा : "जीजी, तुमने देखा नहीं उन्होंने क्या किया है। बग्घी के ऊपर बैठ कर एक अण्डा घोड़ी के ऊपर फेंका और कहा—चलो बेटी, उड़ चलो।"

बग्घी बड़ी तेजी से चलती हुई एक जगह पहुँची जहाँ खूब धुआँ उठ रहा था। लड़की ने धुएँ को देख कर कहा : "इस धुएँ के बीच से मैं नहीं जा सकती। और यह धुआँ उठ क्यों रहा है ?"

"कुछ नहीं," पति ने कहा : "सिर्फ मेरे हाथ जल रहे हैं, उन्हीं से यह धुआँ उठ रहा है।"

भीतर भाई ने अपनी बहन से कहा : "जीजी, यह ज़रूर कोई शैतान है। तुम फौरन घर लौट चलो," और अपनी वफादार घोड़ी को सम्बोधित कर के लड़के ने कहा : "घूमो, बेटी।"

घोड़ी घूम कर घर की ओर चल दी।

"अब तेज़ी से उड़ चलो घर, एक क्षण भी रुकने का काम नहीं है", भाई ने फिर कहा।

लड़की का पति पहले ही बग्घी से उतर कर धुएँ के पास खड़ा हो कर न जाने क्या कर रहा था। वह वहीं छूट गया और बग्घी कुछ ही समय बाद घर पहुँच गई।

लेकिन उन्हें मालूम था कि शैतान फिर आयेगा और इस बार उससे अपनी जान बचाना बड़ा मुश्किल काम होगा। इसलिए पड़ोस की एक बहुत बुद्धिमान बुढ़िया

को उन्होंने मौका पड़ने पर अपनी सहायता करने के लिए बुला लिया। उन्होंने उस शैतान के बारे में बुढ़िया को सब कुछ बता दिया और सहायता माँगी। बुढ़िया ने कहा कि वे लोग घबरायें नहीं, वह उनकी मदद करेगी।

उनका अनुमान बिलकुल सही निकला।

सुबह सुबह शैतान फिर आ धमका और फाटक पर से ही गरज कर बोला :

"है कोई इस घर में बोलो,
मेरी ब्राउन जिसका नाम।
आये निकल सामने मेरे,
मुझको उससे ही है काम।"

इसके उत्तर में इस बूढ़ी स्त्री ने कमरे के भीतर से कहा :

"मैं ही रहती हूँ इस घर में,
मेरी ब्राउन मेरा नाम।
कौन? कहाँ से आये हो तुम?
क्या है तुमको मुझसे काम?"

शैतान ने कहा : "कल रात मैं इसी घर से एक लड़की को ब्याह कर ले गया था, लेकिन वह मुझे चकमा दे कर भाग आई है। मैं उसे ही ले जाने के लिए आया हूँ। लेकिन अगर तुम मेरे चार सवालों के सही जवाब दे दो तो मैं उसे नहीं ले जाऊँगा।"

बुढ़िया ने कहा : "पूछो।"

शैतान ने पहला सवाल किया :

"भेड़ों के बालों से ज्यादा,
क्या सफेद है कोई चीज़?
है कोई तो नाम बताओ,
'गर हो तुममें ज़रा तमीज़।"

बुढ़िया बोली :

"भेड़ों के बालों से ज़्यादा
होती है सफेद एक चीज़।
सभी 'बर्फ़' उसको कहते हैं
सुन लो तुम, हो अगर तमीज़।"

शैतान को उम्मीद नहीं थी कि कोई उसके सवालों का जवाब दे पायेगा। इस लिए उसे बड़ा धक्का लगा और ताव में आ कर उसने दूसरा सवाल पूछा :

"हरे हरे गेहूँ से ज़्यादा,
हरी, कहो क्या होती चीज़?
फौरन उसका नाम बताओ,
'गर हो तुममें ज़रा तमीज़।"

बुढ़िया सवाल सुन कह हँस पड़ी और बोली : "बस, लो, यह रहा तुम्हारा जवाब—

हरे हरे गेहूँ से ज़्यादा,
हरी एक होती है चीज़।
'दूब' कहाती—चरना है क्या?
चरो, नहीं हो अगर तमीज़।'

अब शैतान गुस्से से पैर पटक कर बोला :

"नीले पानी से भी ज़्यादा,
नीली होती है क्या चीज़?
झटपट इसका नाम बताओ,
'गर हो तुममें ज़रा तमीज़।"

बड़ी उपेक्षा से बुढ़िया ने इस सवाल का जवाब दिया जैसे यह उसके लिए चुटकियों का खेल हो :

"नील गगन से ज़्यादा नीली,
पानी हो सकती क्या चीज़!

कान खोल कर सुन लो अपने ,
'गर हो तुममें ज़रा तमीज़ ।"

शैतान को लगा कि यह बुढ़िया तो उससे कहीं ज्यादा होशियार है, लेकिन फिर भी उसने आख़िरी सवाल पूछ ही लिया :

"भोंपू के स्वर से भी ऊँची ,
क्या होती है कोई चीज़ ?
बोलो फ़ौरन, फ़ौरन बोलो ,
'गर हो तुममें ज़रा तमीज़ ।"

व्यंग्य भरी हँसी हँसते हुए बुढ़िया बोली :

"भोंपू के स्वर से भी ऊँची ,
होती 'बादल की गरजन' ।
पर 'स्वर' कोई 'चीज़' नहीं है ,
मूरख, भाग यहाँ से फौरन ।"

और अपनी चप्पल उतार कर शैतान को दिखला कर हिलाती हुई बुढ़िया बोली : "भाग जा यहाँ से । और अब जो कभी इधर शक्ल दिखाई तो मारे चप्पलों के सिर गंजा कर दूँगी ।"

बेचारा शैतान क्या करता, सिर पर पैर रख कर ऐसा भागा कि फिर कभी उस तरफ रुख नहीं किया ।